इंदिरा गांधी





इंदिरा गांधी



"भारत पहले आता है," सारा जीवन इंदिरा गांधी ने यह संदेश सुना. उनका इस नारे में विश्वास भी था.
कई वर्षों तक ग्रेट ब्रिटेन ने भारत पर शासन किया था.
भारतीय लोग उससे थक गए.
वे स्वयं शासन करने के लिए स्वतंत्र होना चाहते थे.

इंदिरा के दादा - मोतीलाल नेहरू ने, भारत की आजादी के लिए काम किया. उनके पिता, जवाहरलाल नेहरू और उनकी माँ, कमला नेहरू ने भी आज़ादी की लड़ाई लड़ी.



इंदिरा के के पिता जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे. वे 1947 से 1964 तक प्रधानमंत्री रहे. उन्होंने मोहनदास गांधी के सिद्धांतों का समर्थन किया (दाएं)

मोहनदास गांधी एक महान नेता थे. वो नेहरू परिवार के अच्छे मित्र थे. गांधी, दुनिया के बड़े नेता थे. उनका मानना था कि साहस, सच्चाई और अहिंसा के सिद्धांतों पर चलकर भारत ग्रेट ब्रिटेन से अपनी आजादी ज़रूर जीतेगा.



अपनी मां कमला और अपने पिता जवाहरलाल के साथ बेबी इंदिरा गांधी.

इंदिरा का जन्म 19 नवंबर, 1917 को उनके दादा के घर इलाहाबाद में हुआ. उनके दादाजी के घर को "आनंद-भवन" कहा जाता था.

लेकिन छोटी इंदिरा के लिए वो घर हमेशा खुशियों का स्थान नहीं था. उनका परिवार उन्हें प्यार करता था, लेकिन वहां सभी लोग राजनीति में भी व्यस्त थे. इसलिए इंदिरा अक्सर अकेलापन महसूस करती थीं.

भारत की आजादी के लिए काम करने के कारण अक्सर उनके परिवार के सदस्य जेल जाते थे. उनके पिता, माता, दादा, दादी, चाची-चाचा सभी ने जेल में समय बिताया. तब इंदिरा को दुख होता था.

इंदिरा भी भारत के लिए काम करना चाहती थीं. जब वो बहुत छोटी थीं, तो वो बगीचे में एक मेज पर खड़ी होकर भाषण देने का अभ्यास करती थीं. नौकर और बच्चे उनके दर्शक होते थे.



गांधी, भारत के नायक थे. गांधी को लोग महात्मा कहते थे, जिसका अर्थ होता है "महान आत्मा".

एक बार मोहनदास गांधी ने कहा कि मुझे लगता है कि भारतीयों को केवल भारतीय चीजों का उपयोग करना चाहिए. इंदिरा का परिवार इससे सहमत था. उन्होंने अपनी सभी ब्रिटिश चीजों को जला दिया. इंदिरा ने अपनी गुड़िया को देखा. वह अपनी गुड़िया से बहुत प्यार करती थीं, लेकिन वह ब्रिटिश थी. इसलिए उन्होंने उसे जला दिया.

इंदिरा के पिता और दादा ने एक राजनीतिक समूह का नेतृत्व किया जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी कहा जाता है. जब इंदिरा ग्यारह साल की थीं, तो वो कांग्रेस में शामिल होना चाहती थी.

"नहीं," उनसे कहा गया, "आपको अठारह साल का होने तक इंतजार करना पड़ेगा."

फिर इंदिरा ने बच्चों का एक समूह शुरू किया. उसका नाम "मंकी ब्रिगेड" था. उसमें एक हजार से ज़्यादा बच्चे शामिल हुए. उन्होंने कांग्रेस पार्टी के छोटे-मोटे कामों में मदद की.

इंदिरा कई अलग-अलग स्कूलों में गईं - कुछ समय वो स्विट्जरलैंड में भी पढ़ीं. उन्हें किताबें पसंद थीं और उनके पिता ने उन्हें वह सभी किताबें दीं जो वो चाहती थीं. 1934 में वो विश्व भारती नामक एक विशेष विश्वविद्यालय में गईं जिसे रबीन्द्रनाथ टैगोर ने स्थापित किया था. वहां उन्होंने भारतीय कलाओं और प्रकृति के बारे में सीखा. यह इंदिरा के लिए बड़ी खुशी का समय था.

लेकिन 1935 में उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा. उनकी माँ तपेदिक (TB) से बहुत बीमार थीं. उनके पिता जेल में थे. इसलिए इंदिरा, मां के साथ स्विट्जरलैंड में डॉक्टरों के पास गईं. वहाँ, 1936 में, कमला नेहरू की मृत्यु हो गई.



ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

उसके बाद इंदिरा इंग्लैंड चली गईं. वो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सोमरविले कॉलेज में पढ़ीं. फिर से वो खुश हुईं. लेकिन उन्हें घर की बहुत याद आई. भारत में अभी कितना काम करना बाकी था!





इंदिरा गांधी अपने बेटे और राजनीतिक वारिस राजीव के साथ बातचीत कर रही हैं.

फिर द्वितीय विश्व युद्ध आया. कुछ समय के लिए इंदिरा ने ब्रिटिश रेड-क्रॉस के लिए एक एम्बुलेंस चालक के रूप में काम किया. लेकिन 1941 में वो भारत लौट आईं. उनके साथ फिरोज गांधी नामक एक युवक भी था. उसका मोहनदास गांधी से कोई संबंध नहीं था. लेकिन वह नेहरू परिवार के अच्छे दोस्त थे.

इंदिरा ने अपने पिता से कहा कि वह फिरोज से शादी करना चाहती थीं. पहले तो पिता को यह विचार पसंद नहीं आया. लेकिन उन्होंने अपना इरादा बदला. 26 मार्च, 1942 को इंदिरा और फ़िरोज़ की शादी हुई. 1944 में उनकी पहली संतान हुई, एक लड़का जिसका नाम राजीव था. 1946 में उनके दूसरे बेटे, संजय का जन्म हुआ. इस बीच, इंदिरा और फिरोज़ गांधी दोनों भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करते रहे.

संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधि डॉ. पी. पी. पिल्लई ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में स्वतंत्र भारत का झंडा उठाया.







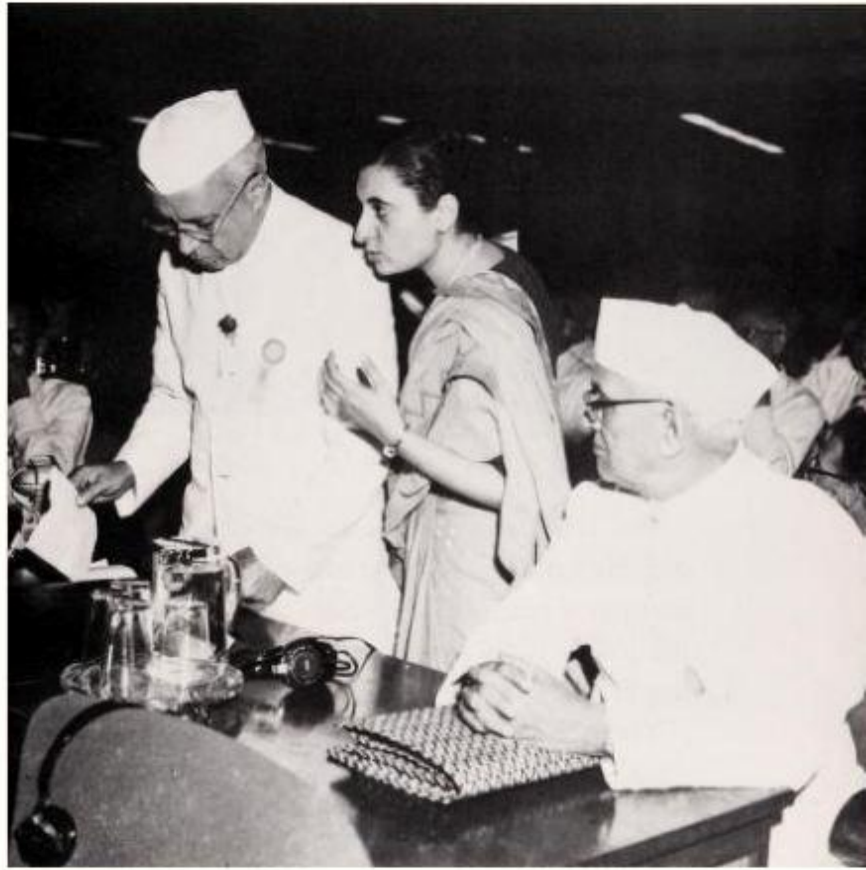
इंदिरा गांधी (बाएं) ने अपने पिता के साथ कई राजनीतिक बैठकों में भाग लिया. प्रधान मंत्री नेहरू (दाएं) सैनिकों की समीक्षा करते हुए.

आखिरकार, 1947 में, भारत एक स्वतंत्र देश बना. कई समस्याएं बाकी थीं. अन्य देशों ने भारत के साथ युद्ध किया. भारतीय लोग आपस में लड़ते रहे. कई, भारतीय बहुत गरीब थे. लेकिन अब भारत के एक मजबूत प्रधानमंत्री थे - इंदिरा के पिता, जवाहरलाल नेहरू.

इंदिरा गांधी को पता था कि उनके पिता को बहुत मदद की ज़रूरत थी. उन्होंने वो सब किया जो उनके लिए करना संभव था. आखिर में इंदिरा अपने बेटों के साथ अपने पिता के साथ रहने चली गयीं. फिरोज और उनकी शादी के लिए यह अच्छा नहीं था. लेकिन इंदिरा के लिए भारत हमेशा पहले स्थान पर था.

इंदिरा ने अपने पिता के साथ पूरी दुनिया की यात्रा की. उसने उनकी समस्याओं को सुना और उन्हें पार्टी और रात्रिभोज देने में मदद की. वो सारी उम्र राजनीति के बारे में सीखती रहीं.

1955 में, कांग्रेस पार्टी ने उन्हें एक समिति में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया. 1959 में उन्हें पार्टी का अध्यक्ष बनने के लिए कहा गया. कुछ लोगों ने सोचा कि वो एक कमजोर अध्यक्ष होंगी. पर उनका अनुमान गलत निकला. इंदिरा ने ऐसे लोगों को निकाल बाहर किया जो अपना काम नहीं कर रहे थे. उन्होंने पार्टी सदस्यों को एक-साथ काम करने में मदद की.



नेहरू और इंदिरा ने 1965 में बांडुंग, इंडोनेशिया में एफ्रो-एशियाई सम्मेलन में भाग लिया.



1966 में, श्रीमती गांधी ने न्यूयॉर्क राज्य का दौरा किया और गवर्नर नेल्सन रॉकफेलर (दाएं) से मुलाकात की.

लेकिन जवाहरलाल नेहरू बूढ़े हो रहे थे. उन्हें अब इंदिरा की और ज्यादा जरूरत थी. इसलिए एक साल बाद इंदिरा गांधी ने अपने पिता के साथ रहने के लिए पार्टी अध्यक्ष का पद छोड़ दिया.

फिर, 1964 में, जवाहरलाल को दिल का दौरा पड़ा. इंदिरा उनकी नर्स बन गईं. उन्होंने देश चलाने में पिता की मदद की. लेकिन कुछ महीनों के बाद, उनके पिता की मृत्यु हो गई.



लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद, इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री और देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी की प्रमुख बनीं.

लाल बहादुर शास्त्री नाम के व्यक्ति भारत के प्रधानमंत्री बने. उन्होंने इंदिरा से पूछा कि क्या वो सरकार में नौकरी करना चाहेंगी. उन्होंने कहा कि वह सूचना और प्रसारण मंत्री बनना चाहेंगी. लेकिन यह काम उन्होंने लंबे समय तक नहीं किया.

1966 में शास्त्रीजी का निधन हो गया. सरकार को नेताओं में से एक नया प्रधानमंत्री चुनना था. उन्होंने जल्द ही फैसला कर लिया कि नेता कौन होगा - इंदिरा गांधी.





इंदिरा ने दुनिया के राजनीतिक नेताओं से भारत के लिए समर्थन प्राप्त करने के लिए मुलाकात की - ब्रिटिश विदेश सचिव सर एलेक डगलस ह्यूम (बाएं) और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन (दाएं).

अचानक वो लाखों लोगों की शासक बन गईं. कुछ ने उन्हें दुनिया की सबसे शक्तिशाली महिला बुलाया. लेकिन दूसरों को लगा कि वो उस ऊंचे पद के लिए अयोग्य थीं.

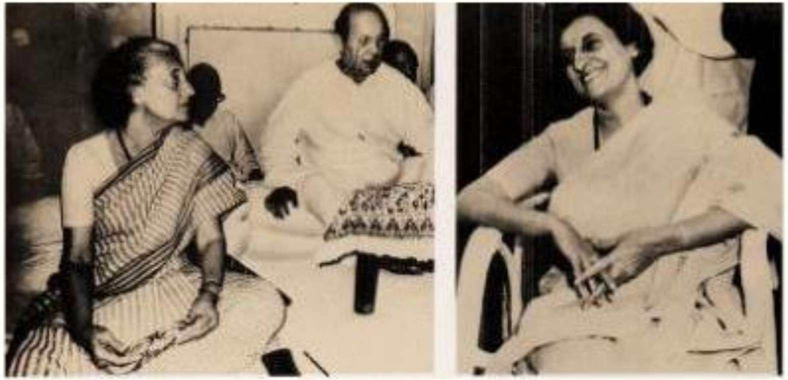
इंदिरा ने दुनिया को दिखाया कि वो मजबूत थीं. उन्होंने भारत की आर्थिक समस्याओं पर भी काम किया. उन्होंने नए देश बांग्लादेश के निर्माण में मदद की. उन्होंने कई राजनीतिक लड़ाइयां जीती. सबसे बढ़कर, उन्होंने शेष दुनिया को यह दिखाने की कोशिश की कि भारत एक महान शक्तिशाली राष्ट्र था.





1980 के दशक में चीनी उपाध्यक्ष और विदेश मंत्री हुआंग हुआ (बाएं) और राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन (दाएं) ने श्रीमती गांधी के साथ विश्व मामलों पर चर्चा की.

फिर, 1975 में, इंदिरा मुसीबत में पड़ गईं. एक अदालत ने कहा कि उन्होंने अपना पिछला चुनाव निष्पक्ष रूप से नहीं जीता था. कई अन्य नेताओं ने कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना चाहिए. इंदिरा ने इस्तीफा नहीं दिया पर उन्होंने अपने विरोधियों को जेल में डाल दिया और देश में इमरजेंसी लगा दी. कई लोगों का मानना था कि ऐसा करना सरासर गलत था.



इंदिरा गांधी ने अपने विरोधियों को हराने के लिए वो सब कुछ किया जो उन्हें करना चाहिए था. वह हमेशा जीती नहीं, लेकिन वो हमेशा अपने सिद्धांतों के लिए लड़ीं. उसके कारण उनके कई दुश्मन बने.

1977 में वो एक चुनाव हार गईं. जिन लोगों को उन्होंने जेल में डाला था उनमें से एक प्रधानमंत्री बन गया. अब इंदिरा की गिरफ्तारी की बारी थी. वह दो बार जेल गईं.

लेकिन 1980 में उन्होंने एक और चुनाव लड़ा. इस बार इंदिरा जीतीं और दूसरी बार प्रधानमंत्री बनीं. अचानक ऐसा लगा जैसे सारा भारत उनसे प्यार करता हो. लोगों ने उन्हें मैडम या अम्मा (माँ) कहा. हर कोई जानता था कि वह कौन थीं.



1980 में इंदिरा गाँधी का छोटा बेटा संजय गांधी एक विमान दुर्घटना में मारा गया.

लेकिन 1980 इंदिरा के लिए भी दुखद समय था. उनके छोटे बेटे संजय की मौत हो गई जब वह जिस विमान से जा रहा था वो दुर्घटनाग्रस्त हो गया. फिर भी, इंदिरा ने काम करना बंद नहीं किया. चाहें वो कितना भी दुखी क्यों न हों उनके लिए भारत पहले आया.



अमृतसर, भारत में स्वर्ण मंदिर.

भारत में एक समूह अपना अलग देश शुरू करना चाहता था. वे सिख धर्म के सदस्य थे. उनमें से कुछ ने अपने स्वर्ण मंदिर को एक किले में बदल दिया. वे अपनी योजना के समर्थन में अन्य लोगों को मजबूर करने के लिए मंदिर से बाहर गए.

इंदिरा को लगा कि उन्हें इस राजनीतिक विरोध को समाप्त करना चाहिए. उन्होंने सैनिकों को स्वर्ण मंदिर पर हमला करने का आदेश दिया. उस लड़ाई में कई सिख और सैनिक मारे गए.





अंतिम संस्कार जुलूस ने इंदिरा गांधी के पार्थिव शरीर को नई दिल्ली की सड़कों के माध्यम से भारत की राजधानी तक पहुंचाया.

लेकिन इंदिरा ने यह नहीं सोचा कि उससे सभी सिखों नाराज होंगे. शायद वो भारत के लिए शांति से जीने का तरीका नहीं था. उन्होंने कई सिखों को अपने निजी पहरेदारों के रूप में भी रखा. 31 अक्टूबर 1984 को, इंदिरा अपने बगीचे में गईं. उन्होंने अपने दो सिख गार्डों से नमस्ते कहा. उनमें से एक को वो कई सालों से जानती थीं. उन्होंने उन पर भरोसा किया था.





श्रीमती गांधी की हत्या के बाद दंगे भड़क उठे. सैकड़ों सिखों (बाएं) पर हमला किया गया और उनके घरों और व्यवसायों को जलाया गया. शांति बहाल करने के लिए सेना की सहायता ली गई.

लेकिन सिख पहरेदार स्वर्ण मंदिर में जो हुआ उसका बदला लेना चाहते थे. इसलिए उन्होंने इंदिरा को गोली मार दी. जब भारतीय लोगों को पता चला कि इंदिरा मर चुकी हैं, तो भयानक दंगे भड़क उठे. कई सिख मारे गए. इमारतें जला दी गईं.



एक सार्वजनिक समारोह में गांधी (ऊपर) का अंतिम संस्कार किया. (नीचे दाएं)
भारतीय नागरिकों ने श्रीमती गांधी के अंतिम संस्कार का जुलूस निकाला





. राजीव गांधी (बाएं) को भारत के प्रधान मंत्री के रूप में,
भारत के राष्ट्रपति ज़ैल सिंह ने शपथ दिलाई.



इंदिरा के बेटे राजीव नए प्रधानमंत्री बने. उन्होंने लोगों से दंगे रोकने की अपील की. ऐसी चीजें भारत के लिए अच्छी नहीं थीं. और राजीव को पता था कि उनकी माँ क्या कहेंगी, "भारत पहले आता है."

इंदिरा गांधी

1917	19 नवंबर- उत्तर भारत के इलाहाबाद में जन्मीं - जवाहरलाल और कमला नेहरू की एकमात्र संतान
1934-35	विश्वभारती, एक भारतीय विश्वविद्यालय में शिक्षण
1936	में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सोमरविले कॉलेज में दाखिला लिया
1941	इंगलैंड से भारत लौटीं
1942	फिरोज गांधी से शादी
1947	में पिता की मदद की जो अब स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री थे
1955	कांग्रेस पार्टी की प्रशासनिक समिति की सदस्य
1959	कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष चुनी गईं
1960	पिता की मदद करने के लिए पार्टी अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया
1964	सूचना और प्रसारण मंत्री बनीं
1966	भारत के प्रधानमंत्री बनीं
1977	प्रधानमंत्री पद के लिए चुनाव हारीं
1960	प्रधानमंत्री पद के लिए फिर से चुनी गईं
1981	अक्टूबर 31- सिख रक्षकों द्वारा गोली मारकर हत्या

समाप्त